'तेरा वर्ष'

मंसा सेवा सप्ताह

03.11.2013

1. स्वमान – मैं स्वराज्याधिकारी हूँ... मैं इस देह की मालिक हूँ... मन, बुद्धि और प्रकृति की भी मालिक हूँ... ।

- `अभी स्वराज्य अधिकारी बनने की विधि और उस विधि को प्रैक्टिकल में अनुभव करना, इस तरफ भी अटेन्शन देना है। आज आवश्यकता है मन के शक्ति द्वारा परिवर्तन करने की। मन की वृत्तियों का परिवर्तन करने की। अभी चारों ओर जैसे भ्रष्टाचार, भष्टाचार की बातें चल रही हैं। अभी इस वातावरण को मन की शक्ति द्वारा परिवर्तन कर सबके मन में परमात्म याद का उमंग-उत्साह पैदा करो।` **– शिवभगवानुवाच**

2. योगाभ्यास –

बापदादा ने कहा कि वर्तमान वायुमण्डल प्रमाण मन्सा शक्ति द्वारा पावरफुल सकाश देने की सेवा करो, वृत्ति द्वारा वृत्तियों का परिवर्तन करो। तो इस बार हम विशेष मंसा सेवा करेंगे। इसके लिये हम अभ्यास करेंगे -

अ. ज्ञान सूर्य से शक्तियों की किरणें लेकर सारे संसार में फैलाना।

ब. बाबा से पवित्र किरणें लेकर सम्पूर्ण प्रकृति और वायुमण्डल में फैलाना।

3. धारणा - अचल-अडोल स्थिति

-`बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा सदा अचल-अडोल आगे से आगे बढ़ता जाए।`

- साक्षीभाव का अभ्यास करते हुए और ड्रामा का सम्पूर्ण ज्ञान यूज करते हुए अपनी स्थिति को अचल-अडोल बनाना है। संकल्प कर लें कि बातें तो आयेंगी और चली जायेंगी परंतु हमें अपनी स्थिति नहीं बिगाड़नी है। हमारी स्थिति हमारा अनमोल खजाना है। हमें इसे सुरक्षित रखना है।

4. स्वचिंतन – सभी रोज 15 मिनट स्वचिंतन अवश्य करें कि भाग्य बनाने के संगम के इस अनमोल समय को हम कैसे बिता रहे हैं... ? हमने स्वयं को कहीं उलझा तो नहीं लिया है... ? ?बाबा चाहते हैं कि हम सर्व खजानों से भरपूर होकर संसार में श्रेष्ठ वायब्रेशन्स फैलायें...यही हमारे इस महान जीवन की सार्थकता है...संकल्प कर लें कि जो बाबा की प्रेरणाएँ, वही हमारा जीवन हो...।

5. तपस्वियों प्रति - प्रिय तपस्वियों ! हम सभी को बाबा के महान कार्य को, महान यज्ञ को सम्पन्न करना है। जिन तपस्वियों को महान कार्य करने की दृढ़ इच्छा है, वे अपने मन-मंदिर में जरा भी अशुद्धि प्रवेश ना होने दें। व्यर्थ संकल्प योगियों के महावैरी हैं, जो तपस्वी इनसे अपनी सुरक्षा करता है, वह साधना के शिखर पर पहुँच जाता है।